बी०ए० पार्ट II हिंदी प्रतिष्ठा

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

हिन्दी साहित्य के इतिहास का इतिहास

यह बड़े ही आश्चर्य का विषय है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रथम इतिहासकार कोई भारतीय तथा हिंदी का विद्वान नहीं बल्कि फ्रांसीसी विद्वान था जिसने 1839 ईस्वी में 'इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई ए ऐंदुस्तानी' के नाम से अपने ग्रंथ का प्रकाशन किया। इसका नाम था गार्सां द तासी। यह ग्रंथ दो खंडों में प्रकाशित हुआ जिसमें उर्दू एवं हिन्दी कवियों के जीवन चरित एवं रचनाएं प्रकाशित थी। किन्तु इनका प्रकाशन कालक्रमानुसार न होकर वर्णक्रमानुसार किया गया था जिससे ऐतिहासिकता की रक्षा नहीं हो सकी। सच कहा जाए तो यह कवि कोश के रूप में तो उपयोगी हो सकता है इतिहास के रूप में नहीं। लगता है तासी के पास इतिहासदृष्टि का सर्वथा अभाव था। फिर भी तासी का यह ग्रंथ ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि यह हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास ग्रंथ है।

तासी के ग्रंथ के प्रकाशन के बाद भारतीय विद्वानों की सक्रियता साहित्येतिहास लेखन में बढ़ गयी। इसी क्रम में 'शिवसिंह सेंगर' ने 'शिवसिंह सरोज' नाम से अपने महत्वाकांक्षी ग्रंथ का 1878 ईस्वी में प्रकाशन किया। यह बड़ा विशाल ग्रंथ है जिसमें कवियों की रचनाओं के नमूने के साथ ही उनका जीवन वृत्त भी उपलब्ध है। किन्तु सेंगर ने भी गार्सां द तासी वाली भूल करदी और कवियों का वर्णक्रमानुसार विवेचन कर अपनी इतिहासदृष्टि के अभाव का परिचय दिया। इस प्रकार यह रचना भी साहित्यिक कोश बनकर रह

साहित्येतिहास कहलाने के लिए दो बातों की अनिवार्य आवश्यकता है (i) काल क्रमानुसार कवियों का परिचय (ii) सुसंगत काल विभाजन। ये दोनों ही विशेषताएं डॉ० जार्ज ग्रियर्सन की किताब 'द माडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान'' में उपलब्ध है जो 1888 ई० में प्रकाशित हुई थी। सच कहा जाय तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' - में इसी इतिहास दृष्टि का उपयोग किया था।

इसके बाद 1913 ईस्वी में 'मिश्रबन्धु विनोद' नामक विशाल ग्रंथ का प्रकाशन हुआ जिसके रचनाकार तीन भाई - श्याम बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र, एवं गणेश बिहारी मिश्र थे। इस ग्रंथ में काल क्रमानुसार साहित्यकारों की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का विवेचन विश्लेषण किया गया है साथ ही काल विभाजन का सार्थक प्रयास किया गया है ग्रंथ के विस्तृत कलेवर से ही प्रतीत होता है कि मिश्रबंधुओं ने साहित्य के यज्ञ में कैसी महत्वपूर्ण आहुति दी थी। यह ग्रंथ ऐतिहासिक महत्व रखता है तथा कोई भी साहित्येतिहासकार इसे बिना पढ़े आगे नहीं बढ़ सकता। इसमें सामग्री की ऐसी प्रचुरता एवं विविधता है कि मिश्रबंधुओं के श्रम की सराहना किए बिना नहीं रहा जा सकता।

1929 ~~ईसवी~~ ईस्वी में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रकाशित हुआ जिसे प्रथम सुव्यवस्थित इतिहास माना जाता है। इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता है जनता की परिवर्तित प्रवृत्तियों के अनुसार साहित्य के स्वरूप में हुए परिवर्तनों का ~~वैज्ञा~~ ~~वैज्~~ वैज्ञानिक आकलन और तद्नुरूप उनका काल विभाजन। इस काल विभाजन को प्रायः सर्वमान्य एवं सर्वाधिक प्रचलित माना गया है आचार्य शुक्ल ने संपूर्ण हिन्दी साहित्य को ~~चार~~ चार कालखंडों में विभाजित किया है -

वीरगाथाकाल - सं 1050 से 1375 तक

भक्ति काल- 1375 से 1700 तक
रीतिकाल- 1700 से 1900 तक
आधुनिककाल- 1900 से अबतक ।

आचार्य शुक्ल के बाद इतिहास लेखन में प्रायः विद्वानों की रुचि तेजी से बढ़ी। इनमें डॉ० राम कुमार वर्मा का हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी भाषा और साहित्य - डॉ० श्याम सुन्दर दास के अतिरिक्त डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ० रामखेलावन पाण्डेय प्रभृति विद्वानों ने भी साहित्य के इतिहास के क्षेत्र में कलम चलायी। किन्तु ध्यान देने की बात है कि पूर्ववर्ती विद्वानों ने आचार्य शुक्ल के नामकरण को केन्द्र में रखकर ही अपने ऐतिहासिक विचारों को प्रस्तुत किया है। ऐसे में स्पष्ट है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास एक मानक ग्रंथ के रूप में हमारे सामने उपस्थित है जिसकी चर्चा के बिना कोई भी इतिहास ग्रंथ पूर्ण नहीं होगा।

सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग
एम० एच० कॉलेज, जहानाबाद।